संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ **भाषा : हिन्दी**
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०२६
वर्ष : ३६ अंक : ३ (निरंतर अंक : ४०५)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

भगवान वेदव्यासजी | श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी | भगवान श्रीकृष्ण | भगवान शिवजी | श्री आशारामजी बापू | माँ अम्बा

मैं जानता हूँ इस सच्चाई को, चाहे इस भारत का कोई मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री क्यों न हो, पूरी पार्टी के द्वारा यदि उनकी कोई सार्वजनिक सभा आयोजित करनी हो, तब भी इतना बड़ा जनसमूह इकट्ठा नहीं किया जा सकता जितना बड़ा जनसमूह आज परम पूज्य बापूजी के दर्शन के लिए यहाँ पर अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ।

- श्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय रक्षामंत्री, तत्कालीन वरिष्ठ सांसद, भा.ज.पा.

जो श्रीकृष्ण में चमचम चमकता है, भगवान शिव में समाधि-सुख देता है, जगदम्बा में उभरता है, वही भगवान वेदव्यासजी, श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी के रूप में, भगवत्पाद लीलाशाहजी बापू के रूप में ज्ञान देता है और आशाराम में छुपा हुआ जागृत होता है। - पूज्य बापूजी

माँ का स्थान बिल्ली नहीं ले सकती

(पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से)

चार वर्षों तक ऐश्वर्यपूर्ण, शक्तिशाली पश्चिम (पश्चिमी देशों) का अनुभव करने के बाद अपनी मातृभूमि के लिए स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था : ''भारत से मैं पहले भी प्रेम करता था लेकिन अब तो भारत की धूल तक मेरे लिए पवित्र हो गयी है, उसकी वायु भी अब मेरे लिए पवित्र है; वह अब मेरे लिए पुण्यभूमि है, तीर्थस्थान है।''

धंधे के लिए अथवा घूमने के लिए अथवा उपदेश करने के लिए या कोई किसी भी कारण से विदेश जाय पर भौतिकता के लिए आध्यात्मिकता का बलिदान नहीं होना चाहिए। नश्वर सुविधा के लिए, नश्वर धन के लिए शाश्वत धन का नाश नहीं होना चाहिए। संसार के किसी भी कारण से ईश्वर, ईश्वरीय शांति का बलिदान देने को हमें राजी नहीं होना चाहिए। बिल्ली के बदले माँ बेची नहीं जाती। संसार की सुविधाएँ बिल्ली हैं और ब्रह्मविद्या, आत्मशांति यह माँ है। बिल्ली (संसार की सुविधाओं) का भी अपना मूल्य है परंतु अपनी जगह पर। माँ की जगह बिल्ली नहीं चल सकती। आत्मशांति के आगे संसार की सुविधाओं की कोई कीमत नहीं। आत्मशांति जिसके पास है उसके लिए संसार की सुविधाएँ बहुमूल्य नहीं हैं। भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय समझदार लोगों ने क्या किया ? जिनकी हजार-हजार, दो-दो हजार, पाँच-पाँच हजार बीघा जमीन थी और सिंधु नदी का पानी था ऐसे जो जमींदार थे और हमारे पिता नगरसेठ भी थे, उन्होंने धर्म के लिए सब छोड़ दिया लेकिन धर्म नहीं छोड़ा। धर्म शांति देता है।

गुरु तेग बहादुर बोलिया, सुनो सिखो बड़भागियाँ। धड़ दीजिये धर्म न छोड़िये ॥

धर्म सत्य और शांति के रास्ते पर ले जाता है। स्वधर्मे निधनं श्रेयः - अपने धर्म में मर जाना अच्छा है। परधर्मो भयावहः - परधर्म भयजनक है, पीड़ा देनेवाला है। तो सुख और शांति देना यह स्वधर्म है, आत्मा का सुख और शांति आत्मा का धर्म है, स्वभाव है।

जिससे तुम्हारी उन्नति हो वह है स्वधर्म। 'स्व' तुम हो, तुम मतलब यह हाड़-मांस का पंचभौतिक शरीर नहीं, मन, बुद्धि, अहंकार नहीं बल्कि इन सबको जो जानता है वह तुम्हारा 'स्व' है, वह तुम हो। प्राण एक बार निकलेंगे ही, धन छूटेगा ही तो 'स्व' को पानेवाले अंतःकरण की रक्षा करने के लिए प्राण और धन देने पड़ें तो दो लेकिन 'स्व' आत्मा-परमात्मा को पाओ।

पूज्य बापूजी का पावन संदेश

...तब परमात्मा का साक्षात्कार होता है

पूज्य बापूजी का ६२वाँ
आत्मसाक्षात्कार दिवस
१२ अक्टूबर

आत्मज्ञान इस जीव का द्वैत भाव मिटा के अद्वैत ज्ञान का प्रकाश कर देता है । जो आत्मज्ञानरहित हैं वे चाहे कुछ भी पा लें, उनके दुःखों का अंत नहीं होगा । सुख उनके पास टिकेंगे नहीं और दुःख मिटेंगे नहीं । सुख को टिकाना है तो अमिट चीज अपने आत्मा को तुम्हें जानना ही पड़ेगा ।

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ।

(श्वेताश्वतर उपनिषद् : ३.८)

दुःखों से मुक्त होने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है ।

कभी न छूटे पिंड दुःखों से
जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं ।

सद्गुरु की कृपा बिना असम्भव

वास्तव में तुम सत् हो परंतु तुम जानते नहीं । श्रीकृष्ण जानते हैं, शिवजी जानते हैं, लीलाशाहजी प्रभु जानते हैं, आशाराम जानते हैं । लो खोल दिया हृदय का भेद । कब ?

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस ।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस ॥

मिला जीव से ईस ऐसा नहीं है । मिला ईस से ईस, मिला सत् से सत् । नहीं जानते थे, जीने की वासना थी, शरीर के मरने का भय था परंतु साधन-भजन किया और अनुष्ठान किया, प्रेरणा मिली, गये तो आसोज सुद दो दिवस पर क्या हुआ ? जैसे बाती बनायी रूई या कपड़े की, तेल में भिगोयी, लगायी बड़े दीये में परंतु वह दीया जले हुए दीये के सान्निध्य से ही जलेगा ऐसे ही जिनको सत्य का साक्षात्कार हुआ है वे सद्गुरु अथवा भगवान सद्गुरु का काम करके साक्षात्कार करायें तब साक्षात्कार होगा ।

अर्जुन के अत्यंत प्यारे श्रीकृष्ण, कृष्ण के अत्यंत प्यारे अर्जुन फिर भी उस सत्य का साक्षात्कार जब तक नहीं हुआ तब तक अर्जुन का भय, शोक, मोह नहीं गया, श्रीकृष्ण के तो दर्शन हुए थे । एकदम खुला सत्य है ।

पहले श्रीकृष्ण सखा होकर उपदेश दे रहे थे । जब अर्जुन ने शिष्यत्व स्वीकार करते हुए कहा : **शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥** 'मैं आदरसहित आपकी शरण आया हूँ, मैं आपका शिष्य हूँ, मुझे उपदेश दीजिये' तब श्रीकृष्ण ने गुरुपद सँभाला और अर्जुन को साक्षात्कार हुआ ।

मेरे गुरुदेव ने जब कृपा की तो मुझे धीरे से कहा कि ''यह शिष्य को या तो पुत्र को ही मिलता है ऋषि परम्परा से ।''

शिष्य भी पुत्र है, पुत्र भी शिष्य ही है । अब मेरे थाऊमल पिताजी आ जायें तो आ गये ठीक है परंतु गुरुदेव आ जायें तो अभी-अभी मैं कूदकर उनके चरणों में नतमस्तक हो जाऊँ क्योंकि उन्होंने जो दिया है उसकी बराबरी करोड़ों-करोड़ों पिता-माता ने जो दिया उससे भी नहीं हो सकती । अनादि काल से सृष्टि चली आ रही है, करोड़ों पिता-माता तुम्हारे-हमारे हो गये ।

साक्षात्कार हेतु कैसी मति चाहिए ?

ईश्वर का ज्ञान होने के लिए हृदय में श्रद्धा चाहिए परंतु बुद्धि की सूक्ष्मतम अवस्था आती है

खेल-जगत की हस्तियों ने बताया अध्यात्म को उनकी सफलता का सूत्र

चर्चित खबर

हाल ही में **विश्व के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ियों में से एक सचिन तेंदुलकर** का एक विडियो वायरल हुआ, जिसमें उन्होंने बताया कि वे हर अंतर्राष्ट्रीय दौरे से पहले गणपतिजी के मंदिर में जाते थे और शांत वातावरण में भगवान से प्रार्थना करते थे । इससे उन्हें अद्‌भुत ऊर्जा मिलती थी, जिससे वे खेल-जगत में सफलता की ऊँचाइयों को छू सके ।

सचिन तेंदुलकर ने कुछ वर्ष पूर्व कहा था : ''ईश्वर हमेशा मेरे साथ रहते हैं और मेरे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं । मैं गुरुओं और देवी-देवताओं की पूजा करता हूँ । मेरा मानना है कि प्रार्थना व्यक्ति को जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी सही निर्णय लेने की शक्ति देती है । कई बार जीवन में असंतोष या अधूरेपन का अनुभव होता है, ऐसे समय में प्रार्थना शक्ति का स्रोत बनती है । मेरा अनुभव है कि ईश्वर स्वयं शक्ति के प्रतीक हैं ।''

स्टीवन लोपेज, अमेरिका (ओलम्पिक स्वर्ण पदक विजेता) : ''भगवान के प्रति मेरा विश्वास मेरी सफलता की बहुत महत्त्वपूर्ण नींव है ।''

ग्वेन जॉर्जेंसन, अमेरिका (ओलम्पिक स्वर्ण पदक विजेता) : ''मुझे लगता है कि आपको ईश्वर को अपना केन्द्र-बिंदु बनाये रखना चाहिए । जब आप ऐसा करते हैं तो इससे आपको जीवन की हर चीज को सही नजरिये से देखने में मदद मिलती है ।''

ट्रेवॉन ब्रोमेल, अमेरिका (विश्व के सबसे तेज किशोर धावकों में से एक) : ''चोटों ने मुझे आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनाया । मैंने अपना भरोसा ईश्वर पर रखा, यह विश्वास रखते हुए कि वे मुझे इससे बाहर निकालेंगे ।''

घोर विडम्बना है कि जहाँ खेल-जगत की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ यह स्वीकार कर रही हैं कि अध्यात्म से जुड़ाव के बिना वे जीवन में निराश, दिशाविहीन तथा असफल हो जातीं वहीं हमारी सरकार द्वारा देश की प्रमुख आध्यात्मिक स्थलियों में से एक संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद को नष्ट करके खेल-मैदान बनाने की योजना बनायी जा रही है ! भौतिक विकास को बढ़ावा देने के लिए विश्व के अनेक देशों में खेल-मैदान आदि निर्माण-स्थल प्रचुर मात्रा में हैं फिर भी वहाँ के लोगों के जीवन में आत्मशांति नहीं है इसलिए वे भारत में आकर वेदांत-ज्ञान, ध्यान की शरण ले रहे हैं । खेल के मैदान से खिलाड़ियों की शारीरिक प्रतिभा विकसित होगी, दर्शकों का मनोरंजन होगा परंतु संतों के आश्रमों से सम्पूर्ण समाज को शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति तथा आध्यात्मिक उन्नति जैसे लाभ होंगे । जहाँ से लाखों-लाखों विश्ववासियों को वास्तविक शांति मिलती है **ऐसी आश्रम जैसी श्रेष्ठ आध्यात्मिक स्थली को तोड़ना विश्वमानव को अशांति की आग में धकेलना नहीं तो और क्या है ?** खेल के मैदान बनें लेकिन सच्चरित्रता, नैतिकता, परदुःखकातरता, आत्मीयता, निःस्वार्थ सेवा जैसे मानवीय मूल्यों को असंख्य लोगों के

(शेष भाग पृष्ठ २८ पर)

पितरों की तृप्ति, देती सुख, शांति, समृद्धि

– पूज्य बापूजी

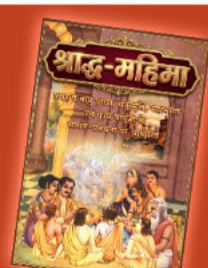

२६ सितम्बर से श्राद्ध पक्ष आरम्भ हो रहा है । जो इस संसार से चले गये उनके लिए आप श्राद्ध करते हैं अन्न, जल, फल, फूल आदि से, पितरों को भोजन कराते हैं तो उनको तृप्ति होती है । दूसरा, पितरों की सद्गति के लिए २४ या ४८ घंटे का कीर्तन रख लिया अथवा एकादशी का व्रत-उपवास करके उनकी सद्गति के लिए पुण्य अर्पित किया । इससे उनको तृप्ति मिलने से वे अपनी नीच वासना या अवस्था से उन्नत हो जाते हैं । **जो जीवनकाल में माता-पिता की सेवा नहीं करते और उनके मरने के बाद भी उनके लिए श्राद्ध, पुण्यकर्म आदि नहीं करते, उनके पुत्र-पौत्र भी उनको सतानेवाले, उनकी अवज्ञा करनेवाले होते हैं ।**

श्राद्ध पक्ष : २६ सितम्बर से १० अक्टूबर

जो पितरों का श्राद्ध नहीं करता, जिसके पितर भटकते रहते हैं वह फिर दूसरे जन्म में तुच्छ योनि में जाता है । इसलिए माता-पिता की सद्गति करने का कर्तव्य पुत्र का है । 'पुम्' नामक नरक से और नीच गतियों से जो तारे उसको बोलते हैं 'पुत्र' । जनक ऐसे पुत्र हुए । उनके पूर्वज राजा अज की दुर्गति हो गयी थी । राजा जनक ने जब ब्रह्मज्ञानी महापुरुष अष्टावक्रजी का सत्संग कराया तब राजा अज की सद्गति हुई ।

भगवान रामजी ने दशरथजी का श्राद्ध किया था । जैसे बिरला परिवार है ऐसे ही राजस्थान में गड़ोदिया परिवार था, उनका बैंक चलता था । वह गड़ोदिया सेठ गयाजी गये और अपने पितरों का तर्पण, पिंडदान आदि कराया । उनको रात्रि को स्वप्न में एक प्रेत दिखा, बोला : ''सेठजी ! मैं आपके गाँव का मोहन नाई हूँ । मैं मर गया हूँ, मेरी दुर्गति हो रही है । आपने अपने पितरों का पिंडदान किया तो कृपा करके मेरा भी कुछ करिये । मैं आपका उपकार नहीं भूलूँगा ।''

सेठजी दूसरे दिन ब्राह्मणों से बोले : ''हमारे गाँव का मोहन नाई मर गया होगा, मेरे को स्वप्न में आया । आप उसके निमित्त श्राद्ध करवाइये ।''

श्राद्ध होने के बाद दूसरी रात को वह स्वप्न में आया । उसको पितृलोक की प्राप्ति हो गयी हो ऐसा उसका दिव्य शरीर दिखा, बोला : ''सेठजी ! मैं भटक रहा था, आपके पिंडदान से मेरी सद्गति हुई । मैं आपका बहुत आभारी हूँ ।''

तो परम श्राद्ध के द्वार खुल जायेंगे

इस नाते भी आपको पितरों की, बड़ों की सेवा-पूजा करनी चाहिए कि आपकी विद्या बढ़े, आपका बल बढ़े, आपकी नम्रता बढ़े । एक शर्त और भी है । तुम श्राद्ध-तर्पण करते हो और यदि तुम करने के बाद उसमें से अपना कर्तापन हटा देते हो तो सोने में सुहागा हो जाता है । 'जिसने इस शरीर को जन्म दिया... एक शरीर से दूसरा शरीर जन्मा तो एक शरीर ने दूसरे शरीर की फर्ज-अदायगी कर दी । मैं इसका साक्षी हूँ ।' इस बात पर यदि तुम आ जाते हो तो तुम्हारे परम श्राद्ध के द्वार खुल जाते हैं ।

श्राद्ध का मंत्र

ॐ, ह्रीं, श्रीं, क्लीं – ये चारों बीजमंत्र हैं और स्वधा देवी पितरों को तृप्त करने में सक्षम हैं

हजारों शत्रुओं पर स्पार्टा के ३०० सैनिक क्यों पड़े भारी ?

– पूज्य बापूजी

तेजस्वी युवा

नाम सुना होगा तुमने स्पार्टा (वर्तमान स्पार्टी) का। एक छोटा-सा शहर है ग्रीस देश का। ई.पू. ४८० में पर्शिया के हजारों शत्रु सैनिकों ने एकाएक उस पर चढ़ाई कर दी। उस समय स्पार्टा तो ग्रीस क्षेत्र का एक छोटा-सा पर स्वतंत्र नगर-राज्य था। स्पार्टा के ३०० सैनिक अपने राज्य की रक्षा में लगे, शत्रुओं को मार भगाने में लगे। देखते-ही-देखते केवल ३०० सैनिकों ने हजारों शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिये और आखिरकार स्पार्टा की विजय हुई, पर्शियन सैनिकों को वापस लौटना पड़ा।

स्पार्टा के सैनिकों से पूछा गया कि ''हजारों सैनिक आये एकाएक तुम्हारे इस छोटे-से राज्य में और तुम्हारे ३०० सैनिकों ने हजारों को मार भगाया और अपने राज्य की रक्षा की। तुम्हारे पास ऐसा क्या है ? कोई जादू है क्या ?''

उन सैनिकों ने कहा कि ''हमारे स्पार्टा में पहले बहुत विषय-विलास, सेक्स चलता था। उससे हमारी सेना और नगरजन सब निस्तेज हो गये थे। फिर एक महापुरुष हुए। उन महापुरुष ने सीख दी कि 'संयम से, सदाचार से जीकर एक-दो बच्चों को, तीन बच्चों को जन्म देना – यह तो ठीक है। लेकिन अपनी जीवनीशक्ति को रोज, सप्ताह या १५ दिन में नष्ट करना यह तो अपना विनाश करना है। पैर पर कुल्हाड़ा मारने से इतना घाटा नहीं होता, उससे तो केवल पैर का हिस्सा क्षतिग्रस्त होता है किंतु काम-विकार से जीवनीशक्ति नष्ट होती है तो सारा शरीर कमजोर हो जाता है।'

उन महापुरुष ने हमारे राज्य के सैनिकों और नागरिकों को ऐसा तो संयम का, ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाया कि अभी चाहे हम मुट्ठीभर लोग हैं परंतु बड़े-से-बड़ा राष्ट्र भी अगर हमको बुरी दृष्टि से देखता है, हमारा राज्य हड़प करने की कोशिश करता है तो हम उसकी नाक में दम करने की ताकत रखते हैं।''

किसी अंजान ने स्पार्टा के सैनिक से पूछा कि ''आपके यहाँ परस्त्रीगमन करनेवाले को क्या सजा होती है ?''

सैनिक : ''अभी तो किसीकी छेड़खानी या किसी बहू-बेटी से बुरी नजर से व्यवहार करनेवाले लोग हैं ही नहीं।''

''मान लो यदि कोई ऐसा करता है, परस्त्रीगमन करता है तो फिर उसको क्या सजा होती है ?''

''यदि ऐसा कोई करता है न, तो उसको इतना बड़ा बैल दंड के रूप में देना पड़ता है जो स्पार्टा के पश्चिमी छोर पर स्थित पर्वत को भी अपने शरीर से ढक ले और वहाँ खड़ा रहकर पूर्वी छोर पर स्थित नदी का पानी पी सके।''

''इतना बड़ा बैल क्या कभी हो सकता है ?''

बोला : ''जब इतना बड़ा बैल नहीं हो सकता है तो फिर इतनी बड़ी गलती (परस्त्रीगमन, दुराचार जैसी) भी हमारे सैनिकों, नागरिकों से नहीं हो सकती।''

ऐसे संयम और अनुशासन ने स्पार्टा को इतिहास में प्रसिद्ध कर दिया।

१९९१ में अमेरिका की सेना की बड़ी दुर्दशा

परमहंस संत भूमानंदजी के जीवन-प्रसंग

(गतांक से आगे)

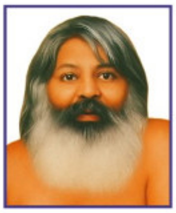

ब्रह्मज्ञान का जादू

संत भूमानंदजी सबके बीच मंद-मंद हास्य बिखेरते रहते और आँखों से असीम प्रेम बहाया करते थे । जितनी शक्ति हो, उतना उस प्रेम को लूट लेने की छूट थी ।

उनके भक्त मनु काका के शब्दों में : ''हमारी समझ में यह बात नहीं आती कि जब-जब भी हम वहाँ गये तब-तब घर, धंधा, बच्चे - यह सब कहाँ और कैसे भूल जाते थे उसका कुछ पता आज तक नहीं चल पाया ।''

ऐसा कौन-सा या कैसा जादू उनके पास था ? गाँव के कहलानेवाले समझदार, इज्जतदार, पैसों से सुखी लोग तो कहते थे : ''बाबा गँजेड़ी हैं । बाबा के पास क्या लड्डू बँटते हैं ?...'' फिर भी वहाँ मानव-मेले की कमी नहीं रहती थी । ऐसा क्यों ? ऐसा कौन-सा अमृत वहाँ था जिसकी खोज में ये सभी भँवरे वहाँ पहुँच जाते थे ?

वह था आत्म-अमृत, जिसकी वर्षा वहाँ होती थी, जिससे मनुष्य यह भी भूल जाता था कि वह कहाँ है, वह है भी या नहीं ।

ब्रह्मज्ञानी की ब्रह्मांडव्यापी दृष्टि

ब्रह्मज्ञानी महापुरुष की चेतना पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त होती है इसलिए सृष्टि में होनेवालीं घटनाओं का उन्हें पता चल जाता है । १९६३ में अमेरिका के राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी की हत्या हुई थी । यह बात सबसे पहले भूमानंदजी ने रात को वहाँ बैठे लोगों को बता दी थी । 'फट, फट, फट...' ऐसे तीन गोलियों की आवाज करते हुए कहा : ''कैनेडी मर गये ।''

इस बात की खबर ३ दिन बाद प्रकाशित हुई थी परंतु चबूतरे पर उसी समय और उसी क्षण महाराजजी ने कैनेडी की हत्या की बात प्रकट कर दी थी ।

ब्रह्मज्ञानी महापुरुष का ब्रह्मसंकल्प

आत्मनिष्ठ महापुरुष का संकल्प ब्रह्मसंकल्प होता है । वे जल्दी संकल्प करते नहीं और जब करते हैं तो प्रकृति उस अनुसार करने को बाध्य हो जाती है ।

सन् १९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण किया था । बहुत गम्भीर संघर्ष चल रहा था । भारतीय सेना को सफलता नहीं मिल रही थी । तभी एक दिन भूमानंदजी ने एक पान मुँह में दबा लिया । दूसरे दिन रेडियो पर समाचार मिला कि चीन ने धीरे-धीरे पीछे हटना शुरू कर दिया है । फिर महाराजजी ने वह पान एक सप्ताह बाद ज्यों-का-त्यों मुँह से बाहर निकाला । जिस समय से उन्होंने पान मुँह में दबाया था उसके बाद से चीन आगे बढ़ न सका और युद्ध रुकने की स्थिति आ गयी ।

(ऐसी ही राष्ट्र-रक्षक चमत्कारिक घटना १९९९ में संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद में हुई थी ।

२७ जून १९९९ को अहमदाबाद आश्रम में पूर्णिमा का शिविर चल रहा था । उधर भारतीय सेना कारगिल में पाकिस्तानी घुसपैठियों से लोहा ले रही थी । पूज्य बापूजी को समाचार मिला कि घुसपैठी 'टाइगर हिल' की चोटियों पर बैठे हैं, जिससे हमारे भारतीय सैनिकों को ज्यादा खतरा है । देश की रक्षार्थ अपने प्राणों की बाजी लगाने को तत्पर भारतीय वीरों के लिए पूज्य बापूजी का

'तुम ही ब्रह्म हो, अपने स्वरूप में स्थित हो जाओ'

(योगवासिष्ठ महारामायण : निर्वाण प्रकरण, द्वितीय-तृतीय सर्ग)

महर्षि वसिष्ठजी श्रीरामचन्द्रजी पर अपनी कृपा बरसाते हुए कहते हैं : हे रामजी ! जो जीवन्मुक्त महात्मा और परावरदर्शी★ पुरुष हैं, जिनको सर्वत्र ब्रह्म ही दिखता है, उनका चित्त सत्यपद को प्राप्त होता है । वह चित्त सत्यरूप कहलाता है और उसमें वासना भी नहीं देख पड़ती । वह चैतन्य मन है और वह चित्त सत्यपद को प्राप्त हुआ होता है । यह जगत ज्ञानवान को लीलामात्र भासित होता है । ज्ञानवान हृदय से शांतिरूप और नित्य तृप्त हैं । उनको सर्वदा आत्मज्योति भासित होती है । विवेक द्वारा उनके चित्त से जगत की सत्ता निवृत्त हो गयी है और उन्होंने स्वरूप में स्थिति पायी है । यह चित् सत्ता कहलाती है । फिर वह कर्म-चेष्टा करता भी देख पड़ता है पर मोह को नहीं प्राप्त होता । जैसे भुना बीज नहीं उगता वैसे ही ज्ञानी की चेष्टा जन्म का कारण नहीं होती । पर जो अज्ञानी हैं उनकी वासना मोहसंयुक्त है । जैसे कच्चा बीज उगता है वैसे ही अज्ञानी वासना से फिर-फिर जन्म लेता है । पर जिस चित्त की आसक्ति निवृत्त हो गयी है उसकी वासना जन्म का कारण नहीं होती । वह चित् सत्ता कहलाती है । हे रामजी ! जिन पुरुषों ने पाने योग्य पद पाया है और ज्ञानाग्नि से चित्त दग्ध किया है वे फिर जन्म नहीं लेते । जो कुछ जगत है वह सब ही उनकी दृष्टि में ब्रह्मरूप है । जैसे वृक्ष और तरु नाममात्र को दो हैं पर वास्तव में एक ही हैं वैसे ही **ब्रह्म और जगत नाममात्र को दो हैं पर वास्तव में एक ही हैं ।** जैसे जल में तरंग और बुलबुले जलरूप हैं वैसे ही ब्रह्म में जगत ब्रह्मरूप है । चैतन्य आत्मारूपी मिर्च में जगतरूपी तीक्ष्णता है ।

हे रामजी ! ऐसे ब्रह्म तुम हो । जो तुम कहो कि मैं चित् नहीं तो यह अयुक्त माना जाता है क्योंकि जो तुम कहो कि मैं जड़ हूँ तो तुम आकाशवत् हुए, तुममें फिर कलना का उल्लेख कैसे हो ? जो चैतन्य हो तो शोक किसका करते हो और जो चिन्मय हो तो निरायास आदि-अंत से रहित हुए । निदान सब तुम ही हो । अपने स्वरूप को स्मरण करो तब शांति पाओगे । तुम सब भावों में स्थित हो और सबको उदय करनेवाले शांतरूप, चैतन्य और ब्रह्मरूप हो । हे रामजी ! ऐसी जो चैतन्यरूपी शिला है उसके अंतःस्थल में वासनारूपी फुरना कहाँ हो ? वह तो महाघनरूप है । हे रामजी ! जो तुम हो वही ब्रह्म है, उसमें और तुममें कुछ भेद नहीं । वही ब्रह्म सत् और असत् रूप होकर भासता है । उसके भीतर सब पदार्थ हैं । उसमें नानात्व और अहं, त्वं, अज्ञ (अज्ञानी), तज्ञ (ज्ञानी) की कुछ कलना नहीं । ऐसा जो सत्यरूप चिद्घन ब्रह्ममय आत्मा है उसको नमस्कार है । हे रामजी ! तुम्हारी जय हो । तुम आदि और अंत से रहित विशाल हो, शिला की तरह ठोस चिद्घनस्वरूप और आकाश की भाँति निर्मल हो । जैसे समुद्र में तरंगें हैं वैसे ही तुममें जो जगत है सो लीलामात्र है । तुम अपने घनस्वरूप में स्थित हो ।

हे निष्पाप रामजी ! जिस चैतन्यरूपी समुद्र में जगतरूपी तरंगें उठती और लीन हो जाती हैं उस अनंत आत्मभाव की भावना से तुम मुक्त और भाव-अभाव से रहित हुए हो । ऐसा जो चिदात्म तुम्हारा

★ परम तत्त्व (ब्रह्म) और प्रपंच (दृश्य जगत) के यथार्थ स्वरूप के ज्ञाता

फलाहार के नियम जानें, स्वास्थ्य सँवारें

रंग–बिरंगे रसीले फल प्रकृति का एक श्रेष्ठ उपहार हैं । ये शरीर में ताजगी, स्फूर्ति और शक्ति भरते हैं तथा मन को प्रसन्न रखते हैं । ताजे, पके फल सात्त्विक आहार माने जाते हैं और सही ढंग से खाने पर अमृत–समान लाभ देते हैं । पूरा लाभ पाने के लिए फलों के सेवन से जुड़े कुछ सरल नियमों का पालन आवश्यक है :

(१) क्षेत्र और ऋतु के अनुकूल चयन : हम जिस जलवायु और मिट्टी में रहते हैं वहाँ उगनेवाले फल ही हमारे शरीर के लिए सबसे अनुकूल (सात्म्य) होते हैं । महँगे विदेशी फलों जैसे कीवी, एवोकाडो, ड्रैगन फ्रूट आदि की तुलना में हमारे स्थानीय फल जैसे जामुन, फालसा, अमरूद, शहतूत आदि हमारे लिए अनुकूल और कहीं अधिक गुणकारी हैं । प्रकृति हर मौसम में हमारे शरीर की आवश्यकताओं के अनुसार ही फल उत्पन्न करती है । इसलिए **हमेशा मौसमी फलों को ही प्राथमिकता दें और बिना मौसम मिलनेवाले कोल्ड स्टोरेज के फलों के हानिकारक परिणामों से बचें ।**

(२) शरीर की प्रकृति और फलों की अवस्था : कफ प्रकृतिवाले व्यक्तियों को केला, सीताफल, खरबूजा, नारियल जैसे कफवर्धक व पचने में भारी फलों से बचना चाहिए । वहीं, पित्त प्रकृतिवालों के लिए ये ही फल विशेष लाभदायी हो जाते हैं ।

फल न तो कच्चे हों और न ही अत्यधिक पके हुए । हमेशा परिपक्व (अच्छी तरह पके) फल खायें । कच्चा आम जहाँ त्रिदोष बढ़ाता है वहीं पका आम बल, पुष्टि, रक्त और शुक्र धातु बढ़ाता है । (अपवाद : बेल का कच्चा फल पके फल से अधिक गुणकारी होता है ।)

(३) सही समय और मात्रा : भोजन के तुरंत बाद फल नहीं खाने चाहिए । भोजन और फलों के सेवन के बीच २ से ३ घंटे का अंतर रखें । जैविक घड़ी के अनुसार सुबह के भोजन से २ से ३ घंटे पहले अथवा ३ से ४ घंटे बाद फल खाने से भोजन व फलों का पाचन सुचारु रूप से होता है। भोजन के साथ आमरस लेना भी आयुर्वेद के अनुसार अनुचित है । परंतु आँवला भोजन से पहले, मध्य में तथा अंत में खाना हितकारी है । (केला, अमरूद, जामुन सुबह खाली पेट नहीं खाने चाहिए ।)

(४) मात्रा : फलों का सेवन आयु, ऋतु, पाचनशक्ति के अनुसार सीमित मात्रा में ही करें ताकि वे आसानी से पच सकें ।

महत्त्वपूर्ण सावधानियाँ

(१) फल काटने के बाद तुरंत खायें । काटकर बहुत देर तक रखने से उसके पोषक तत्त्व कम हो जाते हैं ।

(२) फलों का रस पीने की अपेक्षा फलों को चबाकर खाना अच्छा है ।

(३) दूध और फल दोनों ही बहुत पौष्टिक हैं परंतु जब उन्हें एक साथ मिलाया जाता है तब वे शरीर में विष (आमदोष) का निर्माण करते हैं । इससे दाद, किटिभ कुष्ठ (psoriasis), सफेद दाग (vitiligo) जैसे त्वचा रोग, सर्दी–खाँसी, दमा आदि कफजन्य रोग उत्पन्न होते हैं । दूध व फलों

प्रेम के वश में हैं भगवान

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

प्रेम पशु, पक्षी, मनुष्य को तो अच्छा लगता ही है, परमात्मा को भी अच्छा लगता है । प्रेम के कारण ही अनंत-अनंत ब्रह्मांडों को अपनी भृकुटि के विलासमात्र से नचानेवाला परमात्मा स्वयं छछियाभर छाछ और जरा-से मक्खन पर नाचने को तैयार हो जाता है ।

गोपी कहती है : ''हे केशव ! हे माधव ! हे गोविंद ! ससुरजी ने शर्त डाल दी है कि 'जब तक सभी गायों का गोबर बाहर नहीं ढेर करती हो तब तक कन्हैया के दर्शन को नहीं जा सकती हो ।' तू कहाँ है ? भक्तवत्सल नाम रख के बैठा है । मुझसे ये तसले उठते नहीं हैं । आ जा न ! जल्दी-जल्दी मैं भरूँ और तू मेरे सिर पर तसला रखने की जरा मदद कर ।''

देखते-देखते वह कन्हैया गौशाला में प्रकट होता है और तसला उठवाता है कि ''ले !''

गोपी गोबर फेंक के आयी । दूसरा तसला तैयार किया, तसला सिर पर पहुँचे उसके पहले कन्हैया बोलता है : ''रुक जा, रुक जा ! मैं कोई मजूर हूँ क्या ? मैं ये तसले उठवा रहा हूँ तो तुम मेरे को क्या दोगी ?''

''मेरे बाप ! तुझे मक्खन दूँगी ।''

''कितना दोगी ?''

''एक तसला उठवायेगा तो एक लोंदी मक्खन की दूँगी ।''

''हाँ, फिर तो ठीक है, यह ले ।''

तीसरा तसला भरा और ललाट तक आया, बोले : ''ठहर-ठहर ! तू तो अनपढ़ है, भूल जायेगी कितने तसले हैं ?''

गोपी गोबर में उँगली डालती है और कृष्ण के गाल पर टीका करती है : ''यह एक, यह दो और यह मेरे बाप ! तीन, ले ।''

एक-एक तसला उठवाते हैं और एक-एक गोबर का टीका करवाते हैं । ये कैसे अच्युत हैं ! कैसे केशव हैं ! कैसे माधव हैं ! कैसे मधुमयता देने की लीला करनेवाले हैं !

श्रीकृष्ण गोपी के तसले उठवा रहे हैं । देखते-देखते पूरी गौशाला साफ हो गयी और श्रीकृष्ण का मुँह गोबर के तिलकों से भर गया । जैसे आकाश में तारे टिमटिमाते हैं वैसे ही श्रीकृष्ण के मुख पर गोबर के तिलक दिख रहे हैं । श्रीकृष्ण कहते हैं : ''ला, दे मक्खन !''

वह गोपी गोबर का एक-एक टीका पोंछती जाती है और मक्खन की एक-एक लोंदी देती जाती है ।

श्रीकृष्ण कहते हैं : ''मैं केवल मक्खन थोड़े ही खाऊँगा, साथ में थोड़ी-सी मिश्री भी दे दे ।''

गोपी : ''मिश्री मुफ्त में थोड़े ही मिलेगी, उसके लिए थोड़ा नाचकर दिखाओ ।''

श्रीकृष्ण नाच रहे हैं । उनकी भावभंगिमाओं में सुख के साथ ज्ञान और ज्ञान के साथ प्रेम मिलता है । ये हैं प्रेमावतार, करुणावतार !

वाह रे वाह ! धनभागी हैं सनातनी लोग ! वैदिक संस्कृति के सपूत-सपूतियाँ बड़भागी हैं ! सनातनी कहो, भारतवाले कहो, हरि ॐ वाले कहो, शिववाले कहो, अम्बेवाले कहो, आत्मावाले कहो... धन्य हैं ! उनके माँ-बाप भी धन्य हैं ! हरि ॐ... जो ऐसी महान संस्कृतिवालों को अपने मजहब में घसीटते हैं वे गलती करते हैं । इनके पास जो खजाना है वह

जीवन-उद्धारक सत्साहित्य

इनमें आप पायेंगे : ✻ बाल-युवा पीढ़ी को संयमी व सफल बनानेवालीं कुंजियाँ ✻ मृतक को सद्गति व उसके स्वजनों को शांति व सांत्वना प्रदायक अमृत-वचन ✻ जीते-जी मृत्यु का बोध कराकर विवेक-वैराग्य जगाने तथा अमर आत्मस्वरूप की अनुभूति तक ले जानेवाला सत्संग ✻ लोकोद्धारक संत पूज्य आशारामजी बापू की पद्यमय प्रेरक जीवन-गाथा

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य !
पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

घृतकुमारी स्वरस (Aloe vera juice)

यकृत के लिए वरदानरूप

यह विविध त्वचा-विकारों, पीलिया, नेत्र व स्त्री रोगों, आंतरिक जलन आदि में लाभदायी है । त्रिदोषशामक, जठराग्निवर्धक एवं यकृत (liver) के लिए वरदानरूप है ।

लीवर टॉनिक सिरप व टेबलेट

सभी प्रकार के यकृत-विकार (liver disorders), खून की कमी, पीलिया, रक्त-विकार, कमजोरी, भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, पेटदर्द तथा गैस में अत्यधिक लाभप्रद ।

तुलसी माला

तुलसी माला से भगवन्नाम-जप करने एवं इसे गले में पहनने से ऐसे एक्यूप्रेशर बिंदुओं पर दबाव पड़ता है जिनसे मानसिक तनाव में लाभ होता है । संक्रामक रोगों से रक्षा होती है तथा शरीर-स्वास्थ्य में सुधार होकर दीर्घायु होने में मदद मिलती है ।

संतकृपा चूर्ण

ताजगी, स्फूर्ति एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए संत-महात्मा की प्रेरणा-प्रसादी

पेट के अनेक विकार, जैसे कब्ज, गैस की तकलीफ, बदहजमी, अरुचि, भूख की कमी, अम्लपित्त (hyperacidity), कृमि तथा सर्दी, जुकाम, खाँसी, सिरदर्द आदि दूर करने में कारगर तथा विशेष शक्ति, स्फूर्ति एवं ताजगी प्रदायक चूर्ण ।

कफ सिरप

यह सभी प्रकार के श्वासनली के विकारों - सर्दी, खाँसी, दमा तथा सूखी खाँसी में लाभकारी है । बच्चों व बड़ों - सभीके लिए उपयोगी है ।

प्राकृतिक सुगंधयुक्त, हानिरहित धूपबत्तियाँ

स्पेशल गौ-चंदन धूपबत्ती, साधना चंदन धूप, साधना मोगरा धूप, साधना गूगल धूप

✻ देशी गाय के गोबर और सुगंधित जड़ी-बूटियों के मिश्रण से निर्मित ये धूपबत्तियाँ वातावरण के हानिकारक कीटाणुओं को नष्ट करके पवित्र वातावरण का निर्माण करती हैं । ✻ तन को शुद्ध, मन को पवित्र और बुद्धि को विकसित करने में सहायक हैं । ✻ बुद्धिलाभ, स्वास्थ्य-लाभ, गौ-सेवा लाभ के साथ-साथ भक्तिलाभ देती हैं । ✻ स्पेशल गौ-चंदन धूपबत्ती गोबर, गूगल, पलाश, बिल्व-पत्र, मिश्री एवं अन्य दुर्लभ जड़ी-बूटियों से निर्मित है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५९१९३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com

श्रद्धा-भक्तिपूर्वक देश-विदेश में मनाया गया गुरुपूर्णिमा महोत्सव

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Sep 2026

ऋषि प्रसाद का आदर-पूजन कर मनायी गयी ऋषि प्रसाद जयंती

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad **ऋषि प्रसाद** Rishi Darshan **ऋषि दर्शन** Lok Kalyan Setu **लोक कल्याण सेतु**

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी